अध्ययन सामग्री।—
विषय - हिन्दी
वर्ग - स्नातक खण्ड - II
प्रश्न पत्र - अनिवार्य पेपर (हिन्दी रचना)

सुमन कुमारी
सहायक प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
एच०डी० जैन कॉलेज, आरा

'उत्तर सीता चरित'
प्रश्नोत्तर

Scanned with CamScanner

प्रश्न:- उत्तर सीता चरित ' काव्य की कथा - वस्तु अपने शब्दों में लिखें ?

उत्तर:→ 'उत्तर सीता चरित ' कलान्तर सिंह केसरी का एक प्रबंध काव्य है। प्रबंध काव्य होने के बावजूद भी यह काव्य एक गीतिकाव्य है, क्योंकि यह काव्य मधुरता, कोमलता, प्रेम, सौन्दर्य और करुणा से लबालब भरा हुआ है। सीता एक ख्याति-लब्ध चरित है। सीता राम के चरित्र को लेकर आदि कवि वाल्मीकि ने 'रामायण' की रचना की और हिन्दी में तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' की रचना की। लेकिन राम कथा में जो स्थान या महत्व राम को प्राप्त है वह सीता को प्राप्त नहीं है। इसी आधे-अधूरे कार्य को पूरा करने का कार्य कलान्तर सिंह केसरी ने पूरा करके अपने काव्य - 'उत्तर सीता चरित' में किया है, यानी सीता के जीवन की जो उपेक्षित भाग है उसे पुनः मर्यादित ढंग से इस काव्य में प्रतिष्ठित किया गया है। मूल रूप से इस काव्य में सीता जननी और हिरणी के रूप में चित्रित हुई है, पर यादों के झरोखों से उसके पूर्व के जीवन पर भी यथोचित प्रकाश डाला गया है। इस काव्य की कथा-वस्तु पाँच सर्गों में विभाजित है। इस काव्य का प्रथम सर्ग नैसर्गिक सौन्दर्य से आच्छादित है। इसका अद्भुत और मन-भावन चित्रण प्रथम सर्ग में है।

काव्य के प्रथम सर्ग में ही वाल्मीकि के भव्य आश्रम का जीवन्त और स्वाभाविक चित्रण है। निसर्ग की गोद में यह आश्रम स्थित है और इस आश्रम में रहते व इसी आश्रम में निर्वासन के बाद सीता निवास करती है, उस आश्रम के अलग-बगल पवित्र वातावरण दूर-दूर तक फैला हुआ है। आश्रम के आस-पास नदी, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ,

Scanned with CamScanner

पशु - पक्षी सभी हैं। इन पेड़ों को सीता सींचती है और इन पशु - पक्षियों से बहुत ही हृदय से प्यार करती है।

यह विचित्र विडम्बना है कि राज परिवार की सीता निर्वासित है और तपस्विनी का जीवन व्यतीत कर रही है। यह सच है कि निर्वासित होने के बाद सीता के जीवन में विरह की घड़ियाँ अधिक है। सीता मिथिला के राजा जनक की पुत्री है। मिथिला, सौन्दर्य से भरी पड़ी है, उसके बगल में ही गंगा बहती है, उसका भी मार्मिक बखान इस काव्य में दिखाया गया है। सीता अपने वर्तमान जीवन के दुखों को एक ऋषि का अभिशाप मानती हैं।

~~स्नान कर~~ ~~द्वितीय सर्ग में तमसा~~
~~नदी तट पर स्थित वाल्मीकि~~

द्वितीय सर्ग कवि वाल्मीकि के तमसा नदी में स्नान कर तट पर खड़े रहने के दृश्य से होता है। यहाँ इस काव्य में शरद ऋतु का हृदयग्राही अंकन हुआ है। कवि वाल्मीकि अचानक सीता के पास पहुँचते हैं और उसे चिंता में देखते हैं। वाल्मीकि को ऐसा लगता है कि सीता अपनी पुरानी स्मृतियों से अभी मुक्त नहीं हो पायी है। जीवन में सुख और दुख धूप - छाँव की तरह आते - जाते रहते हैं। सीता को यही अफसोस है कि लव - ~~कुश~~ कुश हमारे ही हाड़ - माँस से निर्मित और मैंने ही उन दोनों का लालन - पालन किया। इसके बावजूद भी ये अपने पिता राम के तरह हो गये, पर वाल्मीकि इससे सहमत नहीं है। वह सीता को बहुत ही सहज ढंग से समझाते हैं और कहते हैं कि विधि के विधान में ही अपने को शामिल करके जीना ही सही जीवन है।

तृतीय सर्ग के आरंभ में गर्मी

के बाद वर्षा ऋतु और वर्षा ऋतु के आने पर जिस तरह से प्रकृति हरियाली से भर जाती है और चारों ओर बहुत ही मनोरम दृश्य नजर आने लगता है। इसका जीवन्त और मार्मिक अंकन इस सर्ग की विशेष खूबी है। आश्रम में लव-कुश का गीत-गायन का कार्यक्रम है, उसे सुनने के लिए आश्रम के सभी निवासी एक जगह एकत्रित हैं। वाल्मीकि गायन के पहले कुछ संबोधन करते हैं। रामयुग वर्तमान का ही नहीं, बल्कि हर काल का एक आदर्श युग है। वाल्मीकि को काव्य सृजन करने की प्रेरणा कैसे मिली; इसका भी विस्तार से अंकन है। कवि अपने काव्य के माध्यम से मनुष्य जीवन में आनन्द और शांति का सृजन करता है।

चतुर्थ सर्ग के आरंभ में सीता अपने पुत्र प्रवास के दौरान दुःखी दिखाई देती है। मृग गंधकली के माध्यम से अपने विचारों को दर्शाते हैं। यह सच है कि सीता अपने पिता की प्रतिज्ञा को न्याय कर राम के प्रति आकर्षित हुई थी। इसी कारण पुरुष और नारी के स्वभाव और चरित्र को भी प्रकट किया गया है। यह सच है कि पुरुष स्वभाव से दंभी, अहंकारी, घमंडी और बुलन्दता का प्रेमी होता है, लेकिन नारी स्वभावतः सहिष्णु, त्यागमयी, दयामयी, क्षमामयी, करुणामयी, ममतामयी और सहनशील तथा शक्तिशाली होती है। सीता की सखी विरजा गीत-गान कर के उसका मनोरंजन करती है। इसी दौरान लव-कुश का प्रवास खत्म होता है। वह वापस आश्रम में लौट आते हैं। यह देख सीता आनन्द और खुशी से विभोर हो जाती है। इसी दौरान लव-कुश सीता गुरु से भेंट करते

चली जाती है। अयोध्या में राम अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं। वहां ऋषि वाल्मीकि भी सादर आमंत्रित हैं। वाल्मीकि के संग लव-कुश भी जाएंगे और रामायण का गान करेंगे। इसी क्रम में राम अपने पुत्र से परिचित होंगे; और उनका अधिकार मिल जाएगा। यह सच है कि लव-कुश अपने पिता राम से भी अधिक समर्थ हैं।

अंतिम सर्ग (पंचम सर्ग) में कवि युग पुरुष सिद्ध करता है। वह देशकाल समय, सबका, महिमा गान करता है और संसार में हर जगह शांति हो, भाईचारा हो, हर कोई एक-दूसरे ~~की~~ ~~का~~ को प्यार करे; अंधकार पर प्रकाश का विजय हो, यह कवि की शाश्वत कामना है। कवि सृष्टि के रहस्यों को तरह-तरह से खोलता है। सीता लव-~~व~~ और कुश कौन हैं, कवि की अद्भुत लेखनी सीता ~~को~~ के मातृत्व को उकेरने में धन्य-धान्य हो गयी है। इस तरह इस काव्य में सीता का मातृत्व का जीवन्त अंकन बहुत ही विस्तार से हुआ है। सीता के व्यक्तित्व के गौरव और गरिमा का गान बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। इस बात की पुष्टि इन पंक्तियों से हो जाती है—

"सिन्दूर माँग में, दुग्ध वक्ष में
लिये लोचनों में पानी
आई मुसकाती उषा —
प्रभात-प्रसविनी जननी कल्याणी।"

~